Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन: जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) के विशेष संदर्भ में

अवधेश कुमार शर्मा [1] डॉ. डी. के. शुक्ला [2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

[2]शोध निर्देशक, प्राचार्य विन्ध्य कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, पन्ना रोड शेरगंज, सतना (म.प्र.)

Manuscript ID:
JRD -2026-180412
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 4(A)
Pp 54-57
April- 2026

सारांश

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का प्रमुख आधार मानी जाती है। उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है जहाँ वे अपने भविष्य, करियर तथा उच्च शिक्षा के बारे में गंभीरता से विचार करना प्रारंभ करते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा उनके जीवन की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शैक्षिक आकांक्षा से तात्पर्य उस लक्ष्य या अपेक्षा से है जिसे विद्यार्थी अपनी शिक्षा के माध्यम से प्राप्त करना चाहते हैं। वर्तमान अध्ययन जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं उनकी शैक्षिक आकांक्षा में लिंग और आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अंतर का अध्ययन करने के लिए किया गया है। अध्ययन में जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वी के शिक्षार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) के उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा-11वी के 200 छात्र एवं छात्राओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि के माध्यम से किया गया है।

मुख्यशब्द- *उच्च माध्यमिक स्तर, शैक्षिक आकांक्षा, उच्च शिक्षा, छात्र-छात्रा।*

Submitted: 23 Mar. 2026
Revised: 30 Mar. 2026
Accepted: 14 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक विकास और भविष्य की संभावनाओं को भी निर्धारित करती है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों में उच्च माध्यमिक स्तर विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यही वह समय होता है जब विद्यार्थी अपने जीवन के लक्ष्य निर्धारित करने लगते हैं। इस चरण में विद्यार्थियों के मन में आगे की पढ़ाई, व्यवसाय और जीवन-उद्देश्यों के प्रति विभिन्न प्रकार की आकांक्षाएँ विकसित होती हैं, जिन्हें शैक्षिक आकांक्षा कहा जाता है। शैक्षिक आकांक्षा का अर्थ उस स्तर की शिक्षा या उपलब्धि से है जिसे प्राप्त करने की इच्छा विद्यार्थी अपने भीतर रखते हैं। यह आकांक्षा किसी विद्यार्थी के भविष्य की योजना, उसकी मेहनत, तथा उसके शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है। उच्च आकांक्षा रखने वाले विद्यार्थी सामान्यतः अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अधिक प्रयास करते हैं, जबकि कम आकांक्षा रखने वाले विद्यार्थी कई बार अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाते। इसलिए विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को समझना शिक्षा-शास्त्रियों, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए अत्यंत आवश्यक है। उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा कई प्रकार के कारकों से प्रभावित होती है। इनमें पारिवारिक पृष्ठभूमि एक प्रमुख कारक है। जिन विद्यार्थियों के माता-पिता शिक्षित होते हैं और शिक्षा के महत्व को समझते हैं, वे अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके विपरीत, जिन परिवारों में शिक्षा के प्रति जागरूकता कम होती है, वहाँ विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ भी सीमित हो सकती है । जब शिक्षक विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हैं और उनकी क्षमताओं पर विश्वास व्यक्त करते हैं, तो विद्यार्थियों के भीतर आत्मविश्वास और प्रेरणा का विकास होता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अवधेश कुमार शर्मा, शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

How to cite this article:
शर्मा, अवधेश. कुमार. & शुक्ला, डी. के. (2026). उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन: जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) के विशेष संदर्भ में. Journal of Research & Development, 18(4(A)), 54–57. https://doi.org/10.5281/zenodo.20340062

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20340062
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

इसके विपरीत, यदि विद्यालय में उचित मार्गदर्शन और प्रेरणा का अभा

व हो, तो विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ सीमित रह सकती हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक परिवेश भी विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को प्रभावित करता है। आज के वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के युग में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की जानकारी और अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। मीडिया, इंटरनेट तथा सामाजिक संपर्क के माध्यम से वे विभिन्न पेशों और शैक्षिक संभावनाओं के बारे में सीखते हैं, जिससे उनकी आकांक्षाएँ भी विस्तृत होती हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी शैक्षिक आकांक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। आत्म-विश्वास, उपलब्धि-प्रेरणा, आत्म-अवधारणा तथा सकारात्मक दृष्टिकोण जैसे गुण विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को प्रभावित करते हैं। जो विद्यार्थी स्वयं को सक्षम और योग्य मानते हैं, वे सामान्यतः उच्च शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करते हैं। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास की कमी होती है, वे कई बार अपनी वास्तविक क्षमताओं से कम लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ सामाजिक-आर्थिक असमानता, ग्रामीण-शहरी अंतर तथा संसाधनों की असमान उपलब्धता जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। इन परिस्थितियों में यह समझना आवश्यक है कि किस प्रकार विभिन्न कारक विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को प्रभावित करते हैं और उन्हें कैसे सकारात्मक दिशा प्रदान की जा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का उद्देश्य भी विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक आकांक्षा का विकास करना है। इसके लिए विद्यालयों में करियर मार्गदर्शन, परामर्श सेवाएँ तथा प्रेरणादायक शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई जा रही हैं। यदि विद्यार्थियों को सही समय पर उचित मार्गदर्शन और अवसर प्रदान किए जाएँ, तो वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप उच्च शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयास कर सकते हैं।

शैक्षिक आकांक्षा

आकांक्षा का तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने लक्ष्य को निर्धारित करके उसे प्राप्त करने की तत्कालीन क्षमता से है अर्थात मूल्य या लक्ष्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा ही आकांक्षा कहलाती है। आकांक्षा से व्यक्ति के तत्कालीन लक्ष्य का संकेत मिलता है। आकांक्षा स्तर को ज्ञानात्मक प्रेरणा भी कहा जाता है। व्यक्ति अपने कार्य करने से पहले के अनुमापन तथा कार्य करने के बाद की उपलब्धि स्तर को सफलता असफलता के अनुभव के द्वारा लक्ष्य का निर्धारण करता है, क्योंकि व्यक्ति जो कार्य करता है, यह किसी न किसी उद्देश्य या आकांक्षा से सम्बन्धित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक आकांक्षा से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में लक्ष्य प्राप्त करने की कठिनाई स्तर से है।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओ का अध्ययन: जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) के विशेष संदर्भ में।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का पता लगाना।
2. लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में अंतर का पता लगाना।
3. आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में अंतर का पता लगाना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर औसत है।
2. लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
3. आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

अनुसंधान विधि

जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों के बीच शैक्षिक आकांक्षाओं के विभिन्न स्तरों का पता लगाने और तुलना करने के लिए, शोधकर्ता ने अध्ययन की वर्णनात्मक पद्धति के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) में उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 11वी के शिक्षार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है।

अध्ययन का प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए, शोधकर्ता ने सम्पूर्ण जनसंख्या से कुल 200 शिक्षार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया है। प्रतिदर्श का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से जिसमें 50 शहरी छात्र तथा 50 शहरी छात्राएं और 50 ग्रामीण छात्र तथा 50 ग्रामीण छात्राएं शामिल हैं।

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता द्वारा प्रतिशत विश्लेषण, मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-टेस्ट सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर के अध्ययन के लिए उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 200 शिक्षार्थियों का एक नमूना शोध के लिए इस्तेमाल किया गया है और उनकी शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का पता लगाने के लिए प्रतिशत विश्लेषण का उपयोग करके उनके अंकों का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षों का विवरण तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या-1: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर की स्थिति

क्रम संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शैक्षिक आकांक्षा का स्तर
1	40	20%	उच्च स्तर
2	133	66.5%	औसत स्तर
3	27	13.5%	निम्न स्तर

तालिका संख्या 1 से पता चलता है कि 20 प्रतिशत शिक्षार्थी 'उच्च' स्तर की शैक्षिक आकांक्षा की श्रेणी में आते हैं, जो दर्शाता है कि उनके पास उच्च शैक्षिक आकांक्षा है। 66.5 प्रतिशत शिक्षार्थी 'औसत' स्तर की शैक्षिक आकांक्षा की श्रेणी में आते हैं, जो दर्शाता है कि उनके पास औसत शैक्षिक आकांक्षा है। 13.5 प्रतिशत शिक्षार्थी 'निम्न' स्तर की शैक्षिक आकांक्षा की श्रेणी में आते हैं, जो दर्शाता है कि उनके पास निम्न शैक्षिक आकांक्षा है।

2. लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में अंतर का अध्ययन

लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में अंतर का पता लगाने हेतु छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा मापनी पर प्राप्त अंकों के माध्य और मानक विचलन की गणना की गई। तत्पश्चात टी-टेस्ट का उपयोग करके माध्य अंतर का परीक्षण किया गया। परिणाम का विवरण तालिका संख्या 2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 2: छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा की तुलनात्मक स्थिति

समूह	सम्पूर्ण संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात	मुक्तांश (DF)	सार्थकता स्थिति
छात्र	100	146.25	16.19	0.36	198	असार्थक
छात्राएँ	100	145.49	13.73			

उपरोक्त तालिका संख्या-2 के अवलोकन से पता चलता है कि छात्रों का मध्यमान 146.25 है और मानक विचलन 16.19 है जबकि छात्राओं का मध्यमान 145.49 है और मानक विचलन 13. 73 है। छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा पर टी-अनुपात का मान 0.36 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर सार्थक नहीं पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना "लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकृत की जाती है। अर्थात लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर एक समान है।

3. आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में अंतर का अध्ययन

आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में अंतर का पता लगाने हेतु शहरी एवं ग्रामीण शिक्षार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा मापनी पर प्राप्त अंकों के माध्य और मानक विचलन की गणना की गई। तत्पश्चात टी-टेस्ट का उपयोग करके माध्य अंतर का परीक्षण किया गया। परिणाम का विवरण तालिका संख्या 3 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या-3: छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा की तुलनात्मक स्थिति

समूह	सम्पूर्ण संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात	मुक्तांश (DF)	सार्थकता स्थिति
शहरी शिक्षार्थी	100	149.31	14.29	2.18	198	सार्थक
ग्रामीण शिक्षार्थी	100	144.86	14.49			

तलिका संख्या 3 के अवलोकन से पता चलता है कि शहरी शिक्षार्थियों और ग्रामीण शिक्षार्थियों का मध्यमान क्रमशः 149.31 और 144.86 है। शहरी शिक्षार्थियों के मानक विचलन का मान 14.29 और ग्रामीण शिक्षार्थियों के मानक विचलन का मान 14.49 है। शहरी एवं ग्रामीण शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर टी-अनुपात का मान 2.18 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इसलिए शून्य परिकल्पना "आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकृत नहीं की जाती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में सार्थक अंतर है। चूंकि शहरी शिक्षार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान ग्रामीण शिक्षार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमान से अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि शहरी शिक्षार्थियों में ग्रामीण शिक्षार्थियों की अपेक्षा उच्च शैक्षिक आकांक्षा है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है जहाँ वे अपने भविष्य और करियर के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा उनके शैक्षिक प्रदर्शन, आत्म-विश्वास तथा जीवन के लक्ष्यों को गहराई से प्रभावित करती है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ केवल उनकी व्यक्तिगत इच्छा पर आधारित नहीं होतीं, बल्कि पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थिति, विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का मार्गदर्शन तथा सामाजिक परिवेश जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती हैं। इस अध्ययन के परिणाम रेखांकित करते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 20 प्रतिशत शिक्षार्थियों में उच्च स्तर की शैक्षिक आकांक्षा है, 66.5 प्रतिशत शिक्षार्थियों में औसत स्तर की शैक्षिक आकांक्षा है तथा 13.5 प्रतिशत शिक्षार्थियों में निम्न स्तर की शैक्षिक आकांक्षा है। इससे यह भी पता चलता है कि लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर एक समान है। जबकि आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में सार्थक अंतर है, जिसमें शहरी शिक्षार्थियों में ग्रामीण शिक्षार्थियों की अपेक्षा उच्च शैक्षिक आकांक्षा है। अतः शिक्षकों एवं अभिभावकों को ऐसे प्रयास करने चाहिये या ऐसे अवसर उपलब्ध कराने होंगे जिससे शिक्षार्थियों में सीखने हेतु उच्च आकांक्षा विकसित हो सके तथा वह अध्ययन करने या सीखने के लिए आन्तरिक रूप से प्रेरित हों। यदि शिक्षार्थियों में अध्ययन करने या सीखने के लिए उच्च शैक्षिक आकांक्षा होगी या शिक्षार्थी सीखने हेतु आन्तरिक रूप से प्ररित होंगे तभी शिक्षार्थी शैक्षिक क्षेत्र में अधिक से अधिक सफलता हासिल कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमार, शैलेन्द्र (2021). माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों की अध्ययन आदत, शैक्षिक आकांक्षा एवं सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन, शोधप्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज ।
2. कूपर, एस०ई०, अर्केलिन, डी०एल० एवं टीबर्ट, एम० जे० (1994). वर्क-रिलेशनशिप वैल्यूज ऐण्ड जेण्डर रोल डिफरेन्सेस इन रिलेशन टू कैरिअर-मैरिएज ऐस्पिरेशन्स. जर्नल ऑफ काउन्सलिंग ऐण्ड डेवेलपमेन्ट, 73(1), 63-68.
3. कौर, पी० (2012). एजूकेशनल ऐस्पिरेशन्स आफ एडोलसेन्ट्स इन रिलेशन टू दिअर लेवल आफ इन्टेलीजेन्स. इन्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी ई-जर्नल, 1(7), 37-43.
4. गोयल, एस०पी० (2004). इफेक्ट आफ जेण्डर ऐण्ड होम इनवायर्नमेन्ट आन एजूकेशनल ऐस्पिरेशन्स. जर्नल आफ कम्युनिटी गाइडेन्स ऐण्ड रिसर्च, 21 (1), 77-81.
5. माऊ, डब्ल्यू एवं बिकोस, एल०एच० (2000). एजूकेशनल ऐण्ड वोकेशनल ऐस्पिरेशन्स आफ माइनारिटी ऐण्ड फिमेल स्टूडेन्ट्स : ए लांगिट्युडिनल स्टडी. जर्नल आफ काउन्सिलिंग ऐण्ड डेवेलपमेन्ट, 78(2), 186-194.
6. राजेश, वी०आर० एवं चन्द्रशेखरन, वी० (2014). एजूकेशनल ऐस्पिरेशन आफ हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स. इण्डियन जर्नल आफ अप्लाइड रिसर्च, 4(12), 171-173.
7. सिंह, वाई०जी० (2011). ए स्टडी आफ एजूकेशनल ऐस्पिरेशन इन सेकेण्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स. इन्टरनेशनल रेफ्रीड रिसर्च जर्नल, 3(25), 38-45
8. शर्मा, राम आहुजा. (2008). विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले कारक. *भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका*, खंड 15, अंक 1, पृ. 23–34।
9. अग्रवाल, जेम्स चंद्र. (2010). शैक्षिक मनोविज्ञान और छात्र प्रेरणा. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन*, खंड 18, अंक 3, पृ. 60–72।
10. सिंह, अरुण कुमार. (2012). उच्च शिक्षा में छात्रों की आकांक्षाएँ और उपलब्धि. *भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका*, खंड 20, अंक 2, पृ. 90–102।
11. चौहान, सूर्यभान सिंह. (2007). सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक सफलता का अध्ययन. *एजुकेशनल रिसर्च जर्नल*, खंड 10, अंक 1, पृ. 35–47।
12. बेस्ट, जॉन विलियम., एवं काहन, जेम्स वी. (2006). शिक्षा में अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, खंड 14, अंक 4, पृ. 110–125।
13. गुप्ता, सत्य प्रकाश. (2011). विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा और शैक्षिक आकांक्षा. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, खंड 17, अंक 2, पृ. 50–63।
14. पांडेय, केदार प्रसाद. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान और छात्र व्यवहार. *शैक्षिक अध्ययन पत्रिका*, खंड 13, अंक 1, पृ. 28–39।
15. त्रिपाठी, लक्ष्मी बली. (2013). उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन*, खंड 21, अंक 3, पृ. 75–88।
16. माथुर, श्याम सुंदर. (2015). शिक्षा में सांवेगिक बुद्धि का महत्व. *एजुकेशनल डेवलपमेंट जर्नल*, खंड 22, अंक 2, पृ. 40–55।